SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 2

भारत में राष्ट्रवाद

भाग - 6

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



सविनय अवज्ञा की सीमाएँ

- हमने देखा कि सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए स्वराज के मायने अलग-अलग थे।
- कुछ समूह तो स्वराज की अवधारणा से प्रभावित ही नहीं थे।

दलित :-

- ऐसा ही एक समूह राष्ट्र के 'अछूतों' का था जो 1930 के बाद खुद को दलित या उत्पीड़ित कहने लगे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



My Mouth is Gagged

Reg. No. B 302

HARIJAN

Editor : K. G. MASHRUWALA

VOL. IX, No. 32] AHMEDABAD — SUNDAY, AUGUST 23, 1942 [FIVE PICE

MAHADEV DESAI

On the 15th of August at about 8-30 P. M., Sevagram was informed over the phone by our Wardha friends that they heard over the radio the following communique of the Government of Bombay :

"The Government of Bombay regret to report the death, about 8-45 a. m., on Saturday, of Mr. Mahadev Desai, who was recently detained under the Defence of India Rules.

Mr. Desai was engaged in conversation with Col. Bhandari, I. M. S., Inspector-General of Prisons, and two of his fellow prisoners when he complained of giddiness. Col. Bhandari advised him to lie down and he found that his pulse was low and that he seemed cold. Dr. Sushila Nair who is detained in the same building was sent for and she arrived at once. As the Civil Surgeon could not immediately be found, another I. M. S. officer was summoned.

Injections were given to stimulate the action of the heart and everything else possible was done to keep up Mr. Desai's strength, but he died from heart failure only 20 minutes from the time when he first complained of feeling unwell."

Though the information was fairly detailed, the three or four persons who first got it were altogether unwilling to believe it, and pressed me not to break it immediately to Durgaben and Narayan (Mahadevbhai's wife and son respectively). Infructuous attempts were made to register trunk calls, and at last it was decided that while telegraphic confirmation should be sought from the Prison authorities, the news should be communicated to the family as it was. For a long time they refused to believe it. Both of them urged, "We are unable to feel the shock, which such news ought to give us. Hence, we feel that it must be false." Others concurred. I was alone to [illegible]. It was a difficult situation for me.

Late Shri Mahadev Desai

Within a short time they were bound to be disillusioned. But should I say that this was wishful thinking? I kept silent and allowed them to express themselves.

At about 10-30 p. m. a condolence telegram was received from Bombay, followed shortly after by another from the Inspector General of Prisons, giving the baneful text "Regret Mr. Mahadev Desai died suddenly this morning of heart failure — Prisons."

The telegram was despatched at 10-3 P. M., and yet it does not say whether and how his body was disposed of subsequently. To the time of writing this, there is no further information, as indeed there is none about Gandhiji himself. But even before this confirmation had come, the usual mental process had gone on, and within a few minutes tears gushed out of their eyes involuntarily, and the mother and the son began to assure and comfort one another that though the information must be false, even if it were true, they should face it bravely.—Narayan urging, "Father has died at a time and in a manner which are most enviable, and which we shall always remain proud of."

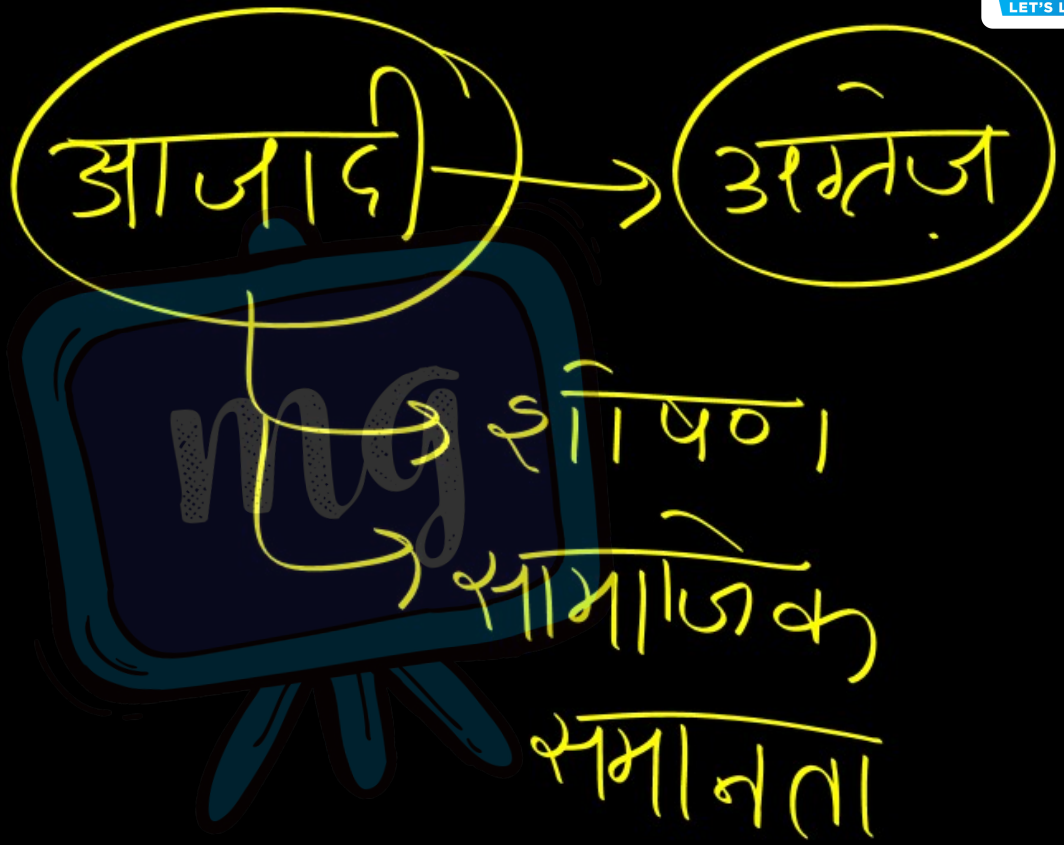
He Did It

At the time when Mahadevbhai was, unknown to us, expiring at Poona, some of us at Wardha were considering the local and general situation, and contemplating to take some steps involving risk to our own lives. But not being used to take quick decisions, and still less to take action, we thought and ruminated over deadly non-violent methods of creating the force which will make India free. We thought and dispersed, not knowing that at the other end, Mahadevbhai had already done it and finished his part of the programme. A satirist amongst us remarked light-heartedly that it was not fair on everyone to die gloriously.

- कांग्रेस ने लंबे समय तक दलितों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि कांग्रेस रूढ़िवादी सवर्ण हिंदुओं से डरी हुई थी।
- लेकिन महात्मा गांधी ने ऐलान किया कि अस्पृश्यता (छुआछूत) को खत्म किए बिना सौ साल तक भी स्वराज की स्थापना नहीं की जा सकती।
- गाँधी जी ने 'अछूतों' को हरिजन यानी ईश्वर की संतान बताया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हरिजन



- उन्हें मंदिरों, सार्वजनिक तालाबों, सड़कों और कुओं पर समान अधिकार दिलाने के लिए सत्याग्रह किया।
- मैला ढोने वालों के काम को प्रतिष्ठा दिलाने के लिए वे खुद शौचालय साफ करने लगे।
- उन्होंने ऊँची जातियों से कहा कि वे अपना हृदय परिवर्तन करें और 'अस्पृश्यता के पाप' को छोड़ें।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

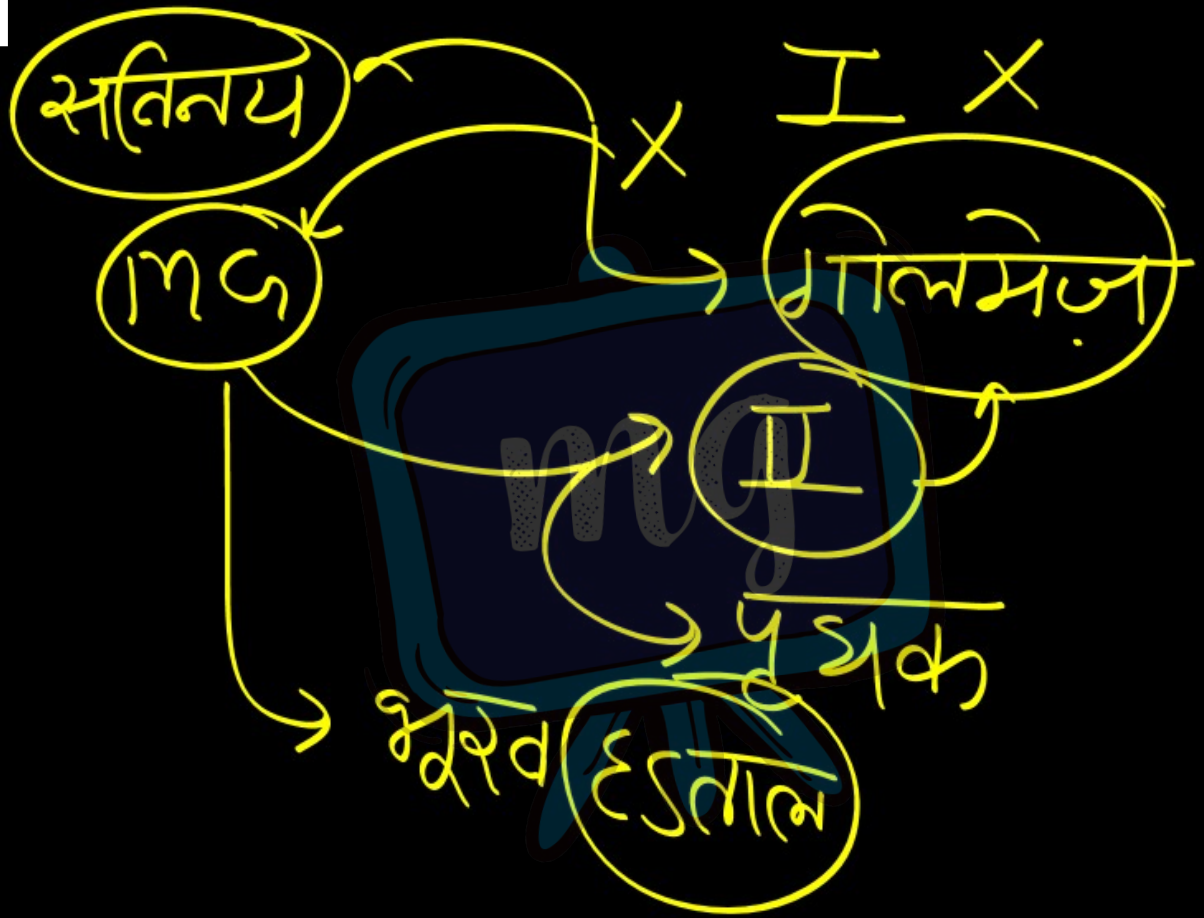


डॉ. अंबेडकर :-

- डॉ. अंबेडकर ने 1930 में दलितों को ''दमित वर्ग एसोसिएशन'' (Depressed Classes Association) में संगठित किया।
- दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन में जब ब्रिटिश सरकार ने दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की अंबेडकर की माँग मान ली तो गाँधीजी आमरण अनशन पर बैठ गये।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सामान्य आरक्षण / पृथक



- गाँधीजी का मानना था कि इससे समाज के एकीकरण की प्रक्रिया धीमी पड़ जायेगी।
- आखिरकार अंबेडकर ने गाँधीजी की राय मान ली और सितंबर 1932 में पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर कर दिए।
- इस पूना-पैक्ट से दलितों को प्रांतीय एवं केन्द्रीय विधायी परिषदों में आरक्षित सीटें मिल गयीं।
- फिर भी, दलित आंदोलन कांग्रेस के नेतृत्व में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन को शंका की दृष्टि से ही देखता रहा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. महात्मा गाँधी ने दलितोंयान के लिए क्या सामाजिक कार्य किये?

Q. पूना समझौते पर एक लेख लिखे?

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

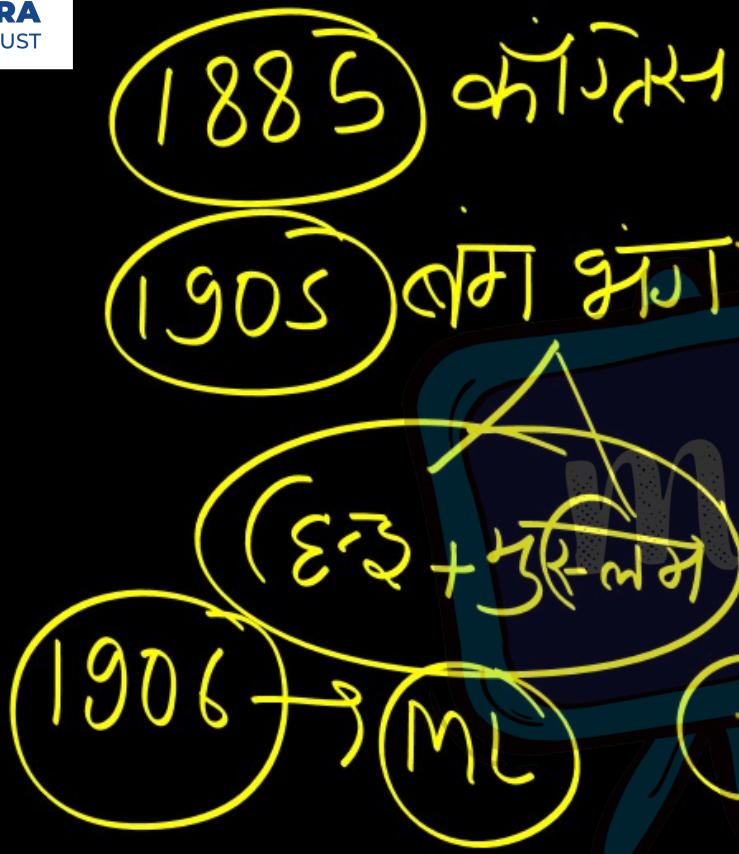
1920
↳ असहयोग
↳ खिलाफत

मुस्लिम वर्ग :-

- असहयोग-खिलाफत आंदोलन के शांत पड़ जाने के बाद मुसलमानों का एक बहुत बड़ा तबका कांग्रेस से कटा हुआ महसूस करने लगा था।
- 1920 के दशक के मध्य से कांग्रेस तथा हिंदू महासभा काफी करीब दिखने लगी थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

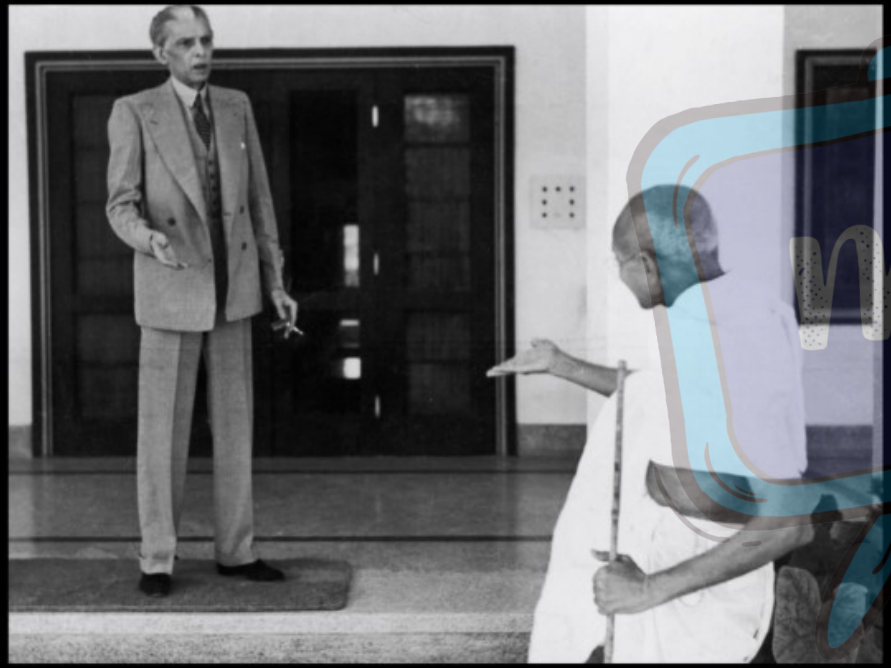
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- जैसे-जैसे हिंदू-मुसलमानों के बीच संबंध खराब होते गए, वैसे-वैसे दोनों समुदाय उग्र धार्मिक जुलूस निकालने लगे, जिससे सांप्रदायिक दंगे हुए तथा दोनों समुदायों के बीच फासला बढ़ता गया।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने 1927 में एक बार फिर गठबंधन का प्रयास किया और ऐसा लगा भी कि अब एकता स्थापित हो ही जाएगी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- सबसे महत्त्वपूर्ण मतभेद प्रतिनिधित्व के सवाल पर थे।
- मुस्लिम लीग के मोहम्मद अली जिन्ना का कहना था कि (i) मुस्लिमों को केंद्रीय सभा में आरक्षित सीटें दी जाएँ तथा (ii) मुस्लिम बहुल प्रांत (बंगाल और पंजाब) में आबादी के अनुपात में प्रतिनिधित्व दिया जाए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1927

1930

- यह बहस चल ही रही थी कि 1928 में आयोजित सर्वदलीय सम्मेलन में हिंदू महासभा के एम.आर. जयकर ने इस समझौते के लिए किए जा रहे प्रयासों की खुलेआम निंदा कर इस मुद्दे के समाधान की सारी संभावनाएँ समाप्त कर दीं।
- जब सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ उस समय दोनों समुदायों के बीच संदेह और अविश्वास का माहौल बना हुआ था।

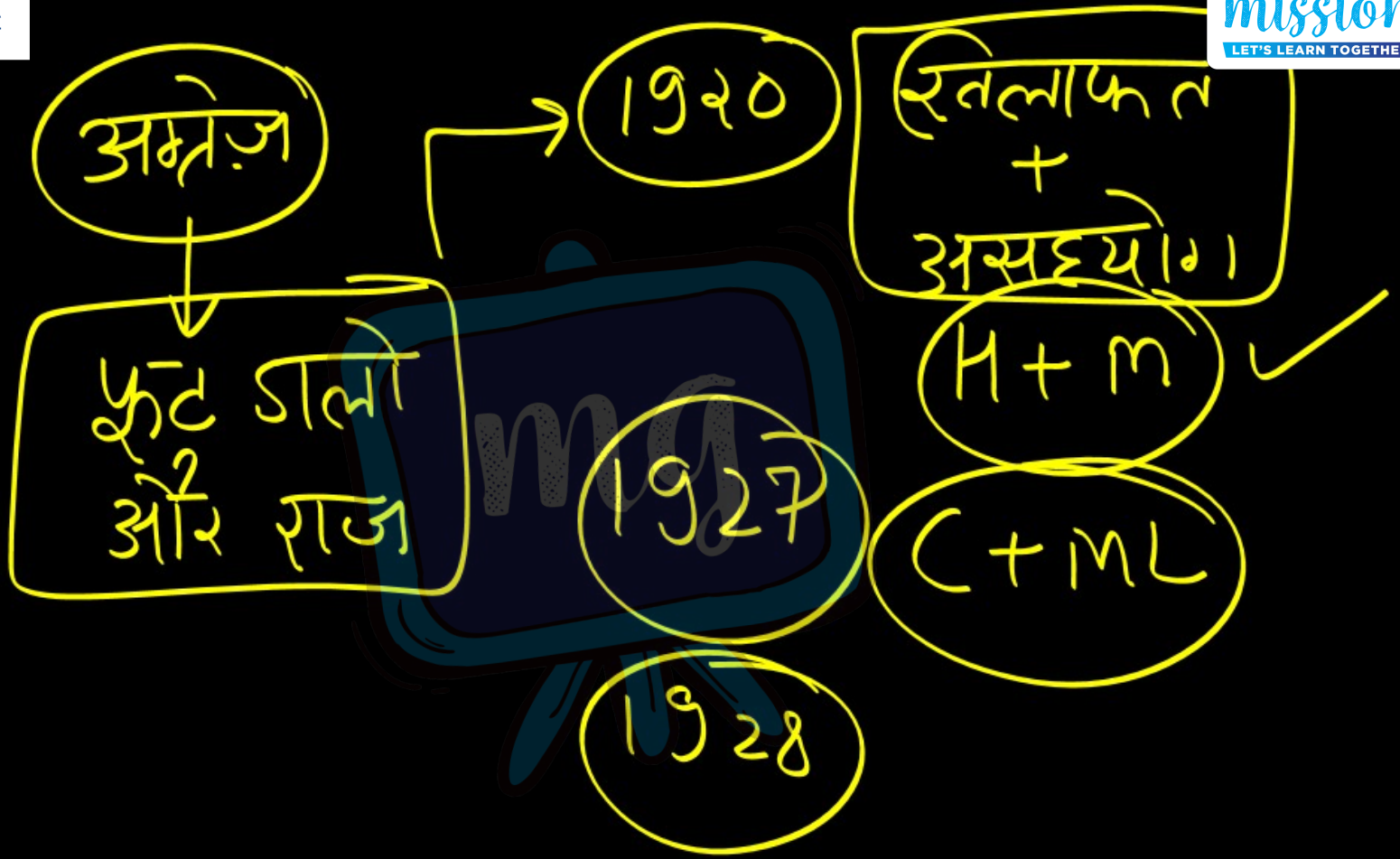
SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मुसलमानों का बड़ा तबक़ा संयुक्त संघर्ष के लिए तैयार नहीं था।
- बहुत सारे मुस्लिम नेता भारत में अल्पसंख्यकों के रूप में मुसलमानों की हैसियत को लेकर चिंता जता रहे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

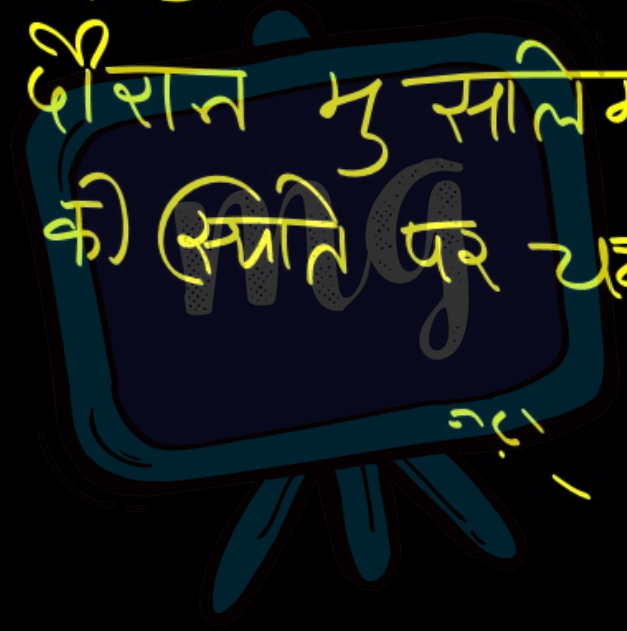
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

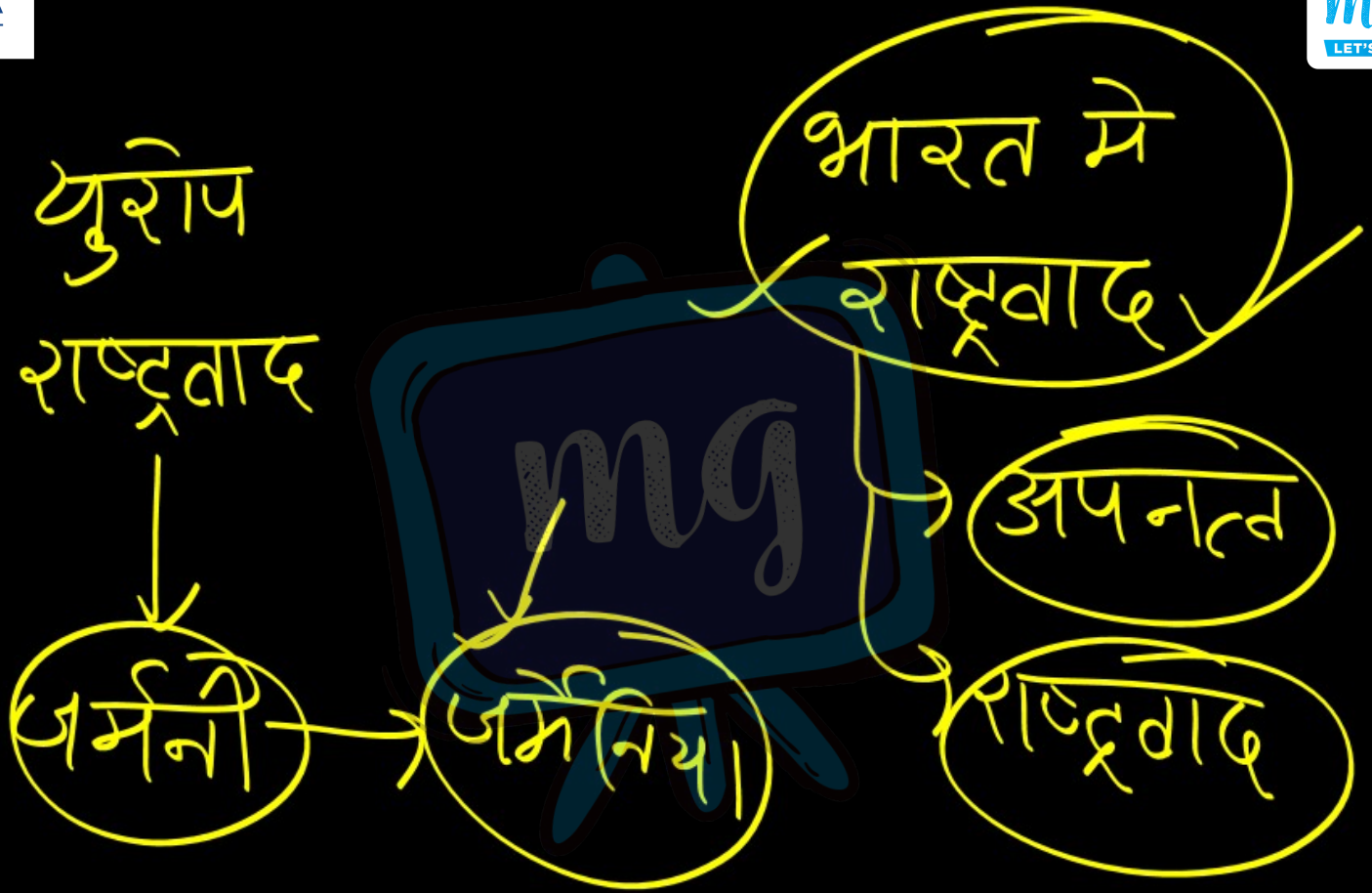
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान मुसलिम वर्ग की स्थिति पर चर्चा करे ?



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सामूहिक अपनेपन का भाव

- राष्ट्रवाद की भावना तब पनपती है जब लोग ये महसूस करने लगते हैं कि वे एक ही राष्ट्र के अंग हैं।
- वे एक दूसरे को एकता के सूत्र में बाँधने वाली कोई साझा बात ढूँढ लेते हैं।
- तब विभिन्न ससुदायों, क्षेत्रों व भाषाओं के होने पर भी सामूहिक अपनेपन का भाव विकसित हो जाता है।
- भारत में सामूहिक अपनेपन की यह भावना संयुक्त संघर्षों के चलते पैदा हुई थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अनेक ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रियाऐं भी थीं जिनसे राष्ट्रवाद लोगों की कल्पना और दिलोदिमाग पर छा गया था।
  - (i) इतिहास व साहित्य
  - (ii) लोक कथाएँ व लोकगीत
  - (iii) चित्र व प्रतीक

राष्ट्र की छवि :-

- राष्ट्र की पहचान सबसे ज्यादा किसी तस्वीर में अंकित की जाती है।
- इस तस्वीर के द्वारा हम राष्ट्र की छवि गढ़कर उसे पहचान सकते हैं।
- 20वीं सदी में राष्ट्रवाद के विकास के साथ भारत की पहचान भी भारत माता की छवि का रूप लेने लगी।
- इस छवि के निर्माण का आरंभ बंकिम चन्द चट्टोपाध्याय ने किया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 1870 के दशक में उन्होंने मातृभूमि की स्तुति के रूप में 'वन्देमातरम' गीत लिखा था। जिसे बाद में उन्होंने अपने उपन्यास आनन्दमठ में शामिल कर लिया जिसे बंगाल में स्वदेशी आंदोलन में खूब गाया गया।
- स्वदेशी आंदोलन की प्रेरणा से अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने भारत माता की विख्यात छवि चित्रित की।

- इस पेंटिंग में भारत माता को एक संन्यासिनी के रूप में दर्शाया गया है।
- वह शांत, गंभीर, दैवी और अध्यात्मिक गुणों से युक्त दिखाई देती है।
- आगे चल कर जब इस छवि को बड़े पैमाने पर तस्वीरों में उतारा जाने लगा तो भारत माता की छवि भी विभिन्न रूप ग्रहण करती गई।
- इस मातृ छवि के प्रति श्रद्धा को ही राष्ट्रवाद में आस्था का प्रतीक माना जाने लगा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

